मनोदशा विकृति के प्रकार

TYPE OF MOOD DISORDER

SEM-VI
CLINICAL PSY
CORE-XIII

मनोदशा विकृति जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें व्यक्ति के मनोभावात्मक प्रक्रिया इस हद तक विकृत बन जाती है कि वह अपने जीवन में सामंजस्य बनाये रखने में सक्षम नही होता है इसीकारण इस विकृति को मनोभावात्मक affective disorder भी कहा जाता है जिसे परिभाषित करते हुए सरासन एव सरासन 2004 ने बताया कि - "मनोदशा विकृति का अर्थ विकृतियों के एक समूह से है जिसमें मुख्यत: संवेगात्मक भाव प्रभावित होता है यह विषाद भी हो सकता है उत्साही उत्तेजना हो सकता है या दोनो यह प्रासंगिक हो सकता है या चिरकालिक"

mood disorder refers to one of a group of disorders primarily affecting emotional tone. Can be depression manic excitement, or both. May be episodic or chronic.

DSM IV के अनुसार मनोदशा विकृति को निम्न श्रेणियों मे विभक्त किया गया है।

A. एक ध्रुवीय विकृति Unipolar disorder
B. द्वि ध्रुवीय विकृति - Bipolar disorder
C. अन्य मनोदशा विकृति - other mood disorder

A. एक ध्रुवीय विकृति या विषादी विकृति - इसका रोगी सिर्फ विषादी लक्षणों से ग्रसित होता है इसमें उन्माद का कोई लक्षण नही दिखायी देता है। डेविसन एव नील 1996 ने बताया कि एक ध्रुवीय विषाद का तात्पर्य उस विकृति से है जिसमें व्यक्ति केवल विषादी घटनाओं से पीडीत रहता है किसी उत्साह से नही। इसे DSM IV मे प्रधान विषाद माना गया है।

इस विषाद विकृति को भी दो प्रमुख भागों मे बाँटा गया है -

1. प्रधान विषाद - Major depression - उस विकृति मे व्यक्ति एक या एक से अधिक बडे विषादी घटनाओं का अनुभव किया रहता है। व्यक्ति प्रत्येक चीजों मे अपनी अभिरुची खो चुका होता है तथा उसे कोई काम मे मन नही

लगता। ऐसे व्यक्तियों में नींद की कमी, शारीरिक वजन में कमी, थकान, स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता में कमी के कारण एवं अयोग्य होने का भाव आत्म हत्या की प्रवृत्ति प्रवृत्ति आदि अधिक होती है। इस विकृति में रोगी कृत होने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे लक्षण कम से कम दो सप्ताह से अवश्य हो रहे हों।

22. डाइस्थाइमिक विकृति - Dysthymic disorder - इस विकृति में विषादी मनोदशा का स्वरूप चिरकालिक होता है। व्यक्ति को गत कई वर्षों से किसी चीज में अभिरुची या आनंद की कमी का अनुभव होता है। बीच में कुछ दिनों के लिए उसकी मनोदशा भले ही सामान्य हो जाता दिख पड़ती है परंतु विषादी मनोदशा की प्रबलता सतत बनी रहती है।

B. द्विध्रुवीय विकृति - Bipolar disorder - द्वि ध्रुवीय विकृति वैसी विकृति को कहा जाता है जिसमें रोगी में विषाद विषाद तथा उन्माद दोनों ही तरह कि अवस्था होती पायी जाती है यही कारण है कि इसे उन्मादी विषादी विकृति Manic depressive disorder भी कहा जाता है। DSM IV में द्विध्रुवीय विकृति के तीन प्रकार बताए गए हैं -

2. साइक्लोथाइमिक विकृति - Cyclothymic disorder - डाइस्थाइमिक विकृति के समान साइक्लोथाइमिक विकृति में भी मनोदशा चिरकालिक क्षुब्धता पायी जाती है। इसमें विषादी व्यवहार तथा अल्प उन्मादी व्यवहार दोनो ही पाये जाते हैं। परंतु इन दोनों में से कोई भी गंभीरता ऐसी नहीं होती है कि वह DSM IV द्वारा निर्धारित कसौटि को छू सके। ऐसे व्यवहार का इतिहास निश्चित रूप से कम से कम दो वर्ष पुराना अवश्य होता है।

ii. द्विध्रुवीय एक विकृति - Bipolar-I disorder - जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह वैसी मानसिक विकृति होती है जिसमें रोगी एक या एक से अधिक उन्माद की घटना तथा एक या एक से अधिक विषादी घटना को अनुभूति अवश्य किया होता है। गुडविन तथा जैमिसन के अनुसार - द्विध्रुवीय एक विकृति के बहुत कम रोगी ऐसे होते हैं जो एक या एक से अधिक बार उन्मादी अवस्था का अनुभव किये हो परंतु उन्हें कभी भी विषादी लक्षणों का अनुभव नहीं हुआ हो।

iii. द्विध्रुवीय दो विकृति - Bipolar II disorder - यह ऐसी मानसिक विकृति है जिसमें रोगी को कम से कम एक अल्प उन्मादी मानसिक अवस्था का अनुभव तथा एक या एक से अधिक विषादी मानसिक अवस्थाओं का अनुभव हो चुका होता है। इसके रोगी को कभी उन्मादी मानसिक अवस्था का अनुभव नहीं होता है। अल्प उन्मादी अवस्था एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति की मनोदशा थोड़ी देर के लिए चढ़ी-चढ़ी होती है तथा उसमें चिड़-चिड़ापन जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। परंतु उनका सामाजिक और व्यावसायिक कार्यों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है तथा ऐसे व्यक्ति को मानसिक अस्पताल में भर्ती कराकर उपचार करवाना भी आवश्यक नहीं होता है।

यहां द्विध्रुवीय एक विकृति या द्विध्रुवीय दो विकृति में मुख्य अंतर यह है कि द्विध्रुवीय दो विकृति में उन्मादी व्यवहार की गंभीरता कम होती है। जबकि द्विध्रुवीय एक विकृति में उन्मादी व्यवहार व्यक्ति में अधिक गंभीर मात्रा में दिखता है।

c. अन्य मनोदशा विकृति - Other mood disorder - इस श्रेणी में वैसी मनोदशा विकृतियों को रखा जाता है जो दैहिक और मानसिक विकृतियों से उत्पन्न हो जाते हैं जैसे - क्लिंटन (Clinton 1993) के अध्ययन के अनुसार प्रत्येक 10 प्रमुख विषादी विकृति में से एक का कारण

मनोवैज्ञानिक या संवेगिक न होकर कोई मेडिकल बिमारी जैसे - कैंसर, मधुमेह, हृदय आघात आदि या कुछ द्रव्य दुरुपयोग या अन्य विकृतियों के उपचार के लिए लिया जाने वाला औषधी आदि होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि मनोदशा विकृति के तीन प्रकार है जो ऊपर वर्णित है। ~~लेकिन इनमें दो~~

Dr. Vijay Kumar Singh